Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

भाषा शिक्षण में समाचार पत्रों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन

मो० फैसल,
शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
आई.ए.एस.ई., जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई-दिल्ली, भारत।

सारांश – आधुनिक युग में जनसंचार के माध्यमों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। जनसंचार के विविध माध्यमों जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र आदि ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। जनसंचार के माध्यमों में समाचार पत्र को सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित माध्यम माना जाता है। प्रारम्भ में समाचार पत्रों का प्रकाशन केवल ख़बरों के लिए किया जाता था लेकिन अब इसका प्रयोग शिक्षा के एक व्यापक स्रोत के रूप में होने लगा है। अब समाचार पत्रों का कार्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं रहा बल्कि अब यह मार्गदर्शक, आलोचक, अन्वेषक के रूप में भी सक्रिय हैं। समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों के द्वारा शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन का विकास तो होता ही है साथ ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता, सामान्य ज्ञान में वृद्धि, राष्ट्रीय चेतना का विकास, खेलकूद और भाषा का विकास भी होता है। भाषा सीखने में तो समाचार पत्र बहुत ही सहायक सिद्ध होते हैं। *चूंकि* समाचार पत्र सर्वमान्य व लोक प्रचलित भाषा का प्रयोग करते हैं , अतः समाचार पत्रों की भाषा बच्चों को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। हमको ज्ञात है कि बच्चों की शिक्षा में प्राथमिक स्तर बहुत ही संवेदनशील व निर्णायक होता है, जिससे जीवन भर के विकास के आधार और सभी संभावनाओं के आधार खुलते हैं। इस स्तर पर बच्चों में महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास होता है। प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक देश की प्रथम प्राथमिकता होती है क्योंकि यह पहली सीढ़ी होती है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई देश अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंच सकता है। अतः बच्चों के विकास की प्रारंभिक अवस्था से ही भाषा-विकास को शिक्षा के प्रमुख उद्देशों में विशेष महत्व दिया जाता है। अत: प्रस्तुत लेख में प्राथमिक स्तर पर शिक्षार्थियों के भाषा के विकास में समाचार पत्रों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द– भाषा शिक्षण, समाचार, आधुनिक युग, जनसंचार, भाषा-विकास,

प्रस्तावना

मनुष्य को उत्कृष्ट सामाजिक जीवन यापन करने हेतु भाषा का विकसित एवं समृद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम भी होती है। भाषा केवल साहित्य के ज्ञान के लिए नहीं, अपितु अन्य विषयों को जानने का अवसर भी प्रदान करती है। अनेक अनुसंधानों द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि जिस बच्चे की भाषा जितनी अच्छी होती है अर्थात् जो अपने भावों, विचारों को जितनी अच्छी तरह अभिव्यक्त कर पाता है उसके भविष्य में सफलता प्राप्त करने की संभावना उतनी ही अधिक प्रबल हो जाती है। अतः बच्चों के विकास की प्रारंभिक अवस्था से ही भाषा-विकास को शिक्षा के प्रमुख उद्देशों में विशेष महत्व दिया जाता है। इन उद्देशों की प्राप्ति हेतु तथा बच्चों को भाषा सीखने-सिखाने की प्रकिया को सहज, स्वाभाविक और सार्थक बनाने के संदर्भ में घर, समाज, विद्यालय, शिक्षक की भूमिका अहम होती है। बच्चा अपने घर, समाज से भाषा का अर्जन करता है परंतु जब वह विद्यालय जाता है तब ही उसकी विधिवत् शिक्षा प्रारंभ होती है। हमको ज्ञात है कि *हमारे देश भारत* में कक्षा 1 से 8 तक की आरंभिक शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि संवैधानिक संशोधन ने शिक्षा को बुनियादी अधिकार में शामिल कर दिया है। इस चरण की शुरुआत में बच्चों को पढ़ने-लिखने और अंकगणित का औपचारिक परिचय कराया जाता है। आठ सालों की यह अवधि वह समय होता है जब बच्चों में महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास होता है और विवेक को आकार मिलता है, सामाजिक कौशलो और बुद्धि एवं काम के लिए जरूरी कौशलो तथा अभिवृत्तियों का विकास होता है।

यदि हम भाषा शिक्षण को ध्यान में रखकर चर्चा करे तो हम कह सकते हैं कि इसके द्वारा बच्चों में कई संभावनाओं को विकसित किया जाता है जैसे भाषा कुशलता, बोधगम्यता, ग्रहशीलता, संवाद, सृजनशीलता आदि। ये ऐसी संभावनाएं हैं जो विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास के साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था से भी जुड़ी हैं। ये ऐसे पक्ष हैं जिनके बिना शिक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

यद्यपि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा -2005 में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि पाठ्यपुस्तकों को ज्ञानार्जन के एकमात्र या अंतिम स्रोत के रूप में नहीं देखना चाहिए किन्तु वास्तविकता यह है कि हमारे देश भारत में आज भी पाठ्यपुस्तकों को ही अधिकांशतः ज्ञान प्राप्ति के एक प्रमुख स्रोत के रूप में ही देखा जाता है, इसका एक प्रमुख कारण है- पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता। पाठ्यपुस्तकें अन्य शिक्षण सामग्रियों की तुलना में बड़े - बड़े महानगरों से लेकर छोटे-छोटे कस्बों में बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। पाठ्यपुस्तकें ज्ञानार्जन के दूसरे स्रोतों की तुलना में मितव्ययी भी होती हैं परंतु इन सभी गुणों के बावजूद इधर शिक्षा के

क्षेत्र में हुए नवीन अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि यदि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ अन्य दृश्य- श्रव्य शिक्षण सहायक सामग्री का भी प्रयोग किया जाए तो अधिगम अधिक संतोषजनक व स्थायी होता है। यदि समाचार पत्रों को ध्यान में रखकर भाषा-शिक्षण पर चर्चा करे तो हम कह सकते हैं कि भाषा सीखने में समाचार पत्रो की भूमिका अतुलनीय होती है।

देश के कुछ प्रमुख समाचार पत्रों में आजकल महिलाओं व बच्चों के लिए विशिष्ट अंकों का प्रकाशन कम से कम सप्ताह में एक बार देखने को मिलता है जिनमें बच्चों के लिए विशिष्ट रूप से उपयोगी सामग्री का प्रकाशन होता है। यह बालपत्र बच्चों की रुचि, मनोरंजन, साहित्य व भाषा अभिरुचि विकसित करने के लिए विशिष्ट रूप से उपयोगी सामग्री का प्रकाशन करते हैं तथा साथ ही भाषा कौशलों जैसे लिखने-पढ़ने का विकास करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंतु यहां अध्यापक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। यहां इस बात को भी दृष्टि में रखना चाहिए कि समाचार पत्रों का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उनका प्रयोग अध्यापक द्वारा कक्षाकक्ष में उचित ढ़ंग से किया गया है या नहीं। यही कारण है कि हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति *माननीय* ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने शिक्षकों की महत्ता को दर्शाते हुए अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक “इंडिया २०२०: ए विज़न आफ न्यू मिलेनियम” में कहा है - " यदि आप किसी भी विषय के शिक्षक हैं तो आपकी भूमिका दूसरे व्यक्तियों की तुलना में अधिक अहम होती है क्योंकि आप ही हैं जो भावी पीढ़ी के निर्माता हैं। "
अत: यहां शोधकर्ता इस बात पर प्रकाश डालना चाहता है कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भाषा-शिक्षण पर समाचार पत्र किस प्रकार प्रभाव डालते हैं ?

शब्दावली का स्पष्टीकरण

समाचार पत्र - समाचार पत्र से तात्पर्य दैनिक रूप से प्रकाशित होने वाले हिंदी अखबारों से हैं।
बाल पत्रों - समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली बाल उपयोगी सामग्री जो बच्चों के मनोरंजन, भाषाई सुधार, ज्ञान, शिक्षा, खेल व नैतिक विकास के लिए उपयोगी होती है।

प्राथमिक स्तर - प्राथमिक स्तर की शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो बालकों को मुख्यत: आरम्भ से कक्षा पांच तक दी जाती है और जिसमें उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है।

भाषा- शिक्षण- विद्यालय पाठ्यक्रम में भाषा एक विषय के रूप में तथा अन्य विषयों के माध्यम के रूप में सीखी-सिखाई जाती है। जब भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है तो वही प्रक्रिया भाषा-शिक्षण के रूप में जानी जाती है।

भाषा- शिक्षण में समाचार पत्रों की भूमिका

सामान्य तौर पर शिक्षा का अर्थ ज्ञान प्रदान करना, जानकारी देना, कुशलता विकसित करना माना जाता है। भाषा शिक्षण भी उस विशिष्ट व्यवस्था से संबंधित है, जिसमें भाषाई कौशलता का विकास संभव हो। भाषाई कुशलता का संबंध भाषा के चार कौशलो से है- सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा शिक्षण में इन कौशलो के क्रम का ध्यान रखा जाता है।

भाषा शिक्षण के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005 में वर्णित हैं- " निवेश - समृद्ध संप्रेषण का वातावरण भाषा शिक्षण की पूर्व शर्त है, चाहे वह पहली भाषा हो या दूसरी। निवेश के अन्तर्गत आते हैं- पाठ्यपुस्तकें, शिक्षार्थी द्वारा चयनित पाठ और कक्षा पुस्तकालय जिसमें अनेक विधाओं के लिए जगह हो; छपी सामग्री (उदाहरण के लिए युवा शिक्षार्थियों के बड़ी पुस्तकें): एक से अधिक भाषा में समांतर पुस्तके और सामग्री; मीडिया सामग्री (मैगज़ीन / समाचार पत्र के स्तभ, रेडियो / आडियो कैसेट); और प्रामाणिक सामग्री।" (पृष्ठ संख्या - ४५)

हालांकि भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता लेकिन यह भी सत्य है कि भाषा को सिखाने में यदि शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग किया जाए तो भाषा को अच्छी तरह सिखाया जा सकता है।

ऐसे ही कुछ विचार भाषा शिक्षण के संदर्भ में विलियम एच रुपले के हैं, उनके अनुसार- " प्राथमिक स्तर पर पठन कौशलो के विकास में समाचार पत्र महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकते हैं। ये सस्ते व समसामयिक होते हैं एवं विभिन्न विषयों को समेटे हुए होते हैं। ये बहुत लोगों की रुचियों का ध्यान रखते हैं और छात्रों को पढ़ने के लिए उचित सामग्री प्रदान करते हैं। "

हम जानते है कि भाषा का स्वरूप गतिशील होता है। वह निरंतर बदलती रहती है। *चूंकि* पाठ्यपुस्तकें एक निश्चित समय पर लिखी जाती हैं अत: उनमें सम्मिलित भाषाई सामग्री काफी हद तक सैद्धांतिक व कृत्रिम हो जाती है। कई राज्यों में अभी भी पुरानी पद्धति पर लिखी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। ऐसे में समाचार पत्रों का प्रयोग भाषाई कौशल सिखाने में विशेष रूप से सहायक होता सिद्ध है क्योंकि समाचार पत्रों की भाषा सजीवता लिए हुए होती है और भाषा का प्रयोग काफी हद तक बोलचाल वाली भाषा का होता है। अतः बच्चे समाचार पत्रों से भाषा के नवीन व विविध प्रयोग सीख सकते हैं। भाषा विकास की दृष्टि से समाचार पत्र बहुत अधिक महत्व रखते है। ये न केवल भाषा को सिखाते हैं बल्कि भाषा को समृद्ध भी करते हैं। समाचार पत्र बच्चों में पठन कौशलो को विकसित करने, शुद्ध उच्चारण करने, सही वर्तनी अवबोध करने,

मुहावरों व लोकोक्तियों का सही प्रयोग सिखाने व शब्द भंडार में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बाल सुलभ कौशलो का विकास होने से लेखन कौशल पर भी असर पड़ता है।

समाचार पत्रों से बच्चों का शब्दकोश भी विस्तृत व संवर्धित हो जाता है। उनके व्यक्तिगत शब्दकोश में नए शब्दों का समावेश होता रहता है। हमको ज्ञात है कि भाषा का एक गुण यह भी होता है कि वह दूसरी भाषा व बोलियों के लोक प्रचलित शब्दों को अपने अंदर समाहित कर लेती है। समाचार पत्रों में भी अनेक भाषा व बोलियों के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। समाचार पत्रों में न केवल क्षेत्रीय घटनाओं को वरन् राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को भी स्थान दिया जाता जिसके परिणाम स्वरूप भाषा का स्तर व्यापक बन जाता है और नवीन शब्दावली का प्रयोग देखने को मिलता है। यदि शिक्षार्थी लगातार समाचार पत्रों के संपर्क में रहते हैं तो धीरे-धीरे नवीन शब्दावली पर उनका अधिकार स्थापित हो जाता है अर्थात् उनके व्यक्तिगत शब्दकोश में बढ़ोत्तरी होती है और जैसा सर्वविदित है कि जिस व्यक्ति के पास जितने अधिक शब्द होते हैं वह भाषा की दृष्टि से उतना ही समृद्ध कहलाता है। समाचार पत्रों में सरल, सहज व आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है अर्थात् समाचार पत्र सर्वमान्य व लोक प्रचलित भाषा का प्रयोग करते हैं।

समाचार पत्रों में भाषा का जैसा कलात्मक प्रयोग देखने को मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। समाचार पत्र भाषा के सुंदर नमूने पेश करते हैं। महात्मा गांधी भाषा के इसी रूप के पक्षधर के थे। प्रेमचंद भी ऐसी की सरल-सुबोध भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया करते थे। यही कारण है कि प्रेमचंद के पाठकों की संख्या जयशंकर प्रसाद के पाठकों की तुलना में कहीं अधिक *मानी जाती* है। अपनी भाषा की किलिष्टता के कारण ही जयशंकर प्रसाद पुस्तकीय कवि या विश्वविद्यालय के कवि बनकर रह गए।

नित नवीन शब्दों के साथ-साथ शब्दों के उचित प्रयोग को भी समाचार पत्र बढ़ावा देते है। समाचार पत्रों में विषय वस्तु के अनुरुप ही भाषा का प्रयोग होता है जिसे पढ़कर बच्चे संदर्भानुसार भाषा प्रयोग से अवगत होते हैं। भाषा के विविध प्रयोगों से परिचित होते हैं। बच्चे सैद्धांतिक रूप से ही नहीं वरन् व्यवहारिक जीवन में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सीख सकते हैं।

भाषा विकास के साथ-साथ समाचार पत्र बच्चों का परिचय विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे कहानी, नाटक, कविता गीत आदि से कराते हैं जिससे बच्चों में सौन्दर्य का विकास होता है और साहित्य रचना की प्रेरणा मिलती है। समाचार पत्रों में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री जैसे पहेलियां, चुटकुले व भाषा *संबंधित* खेल प्रकाशित होते हैं जिससे बच्चों की पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है। इनके द्वारा बच्चों को शुद्ध उच्चारण, सही शब्द प्रयोग, वाक्य प्रयोग, विराम चिन्हों विधाओं का प्रयोग सिखाया जा सकता है।

समाचार पत्रों में *मुख्यत*: साहित्य की निम्नलिखित विधाओं का *प्रकाशन देखने को मिलता है :*

कहानी - बच्चों की प्रिय विधा होने के कारण बाल समाचार पत्रों में अनेक प्रकार की कहानियां प्रकाशित की जाती हैं जो बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई होती हैं । राजा रानी, अकबर बीरबल, तेनालीराम, पंचतंत्र, पशु पक्षियों आदि की कहानियां व नैतिक कथाएं समाचार पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। इन कहानियों से बच्चों में एक ओर पठन कौशल का विकास होता है वहीं दूसरी तरफ साहित्य में रुचि भी उत्पन्न होती है। कहानियां पढ़कर बच्चों में भावनात्मक व चारित्रिक विकास भी होता है।

कहानियां भाषा अधिगम की दृष्टि से भी बच्चों को बहुत लाभ पहुंचाती हैं। कहानियों को पढ़कर बच्चे भाषा के नियमों, संरचनाओं व विभिन्न संदर्भों के अनुसार भाषा के नियमों को सीखते हैं।

कविता - भाषाई लाभ की दृष्टि से प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए कविता बहुत लाभदायक सिद्ध होती है। छोटे बच्चों के लिए समाचार पत्रों में कविता का चयन करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि कविता में गेयता हो क्योंकि बार बार सुनने, पढ़ने व दोहराने से गीत बच्चों को आसानी से याद हो जाते हैं, परिणाम स्वरूप बच्चों में मनोरंजन के साथ साथ बुनियादी कौशलो (श्रवण व पठन कौशल) का भी विकास हो जाता है।

पहेलियां- बाल समाचार पत्रों में बच्चों के लिए समय समय पर पहेलियों का प्रकाशन किया जाता है जिनके द्वारा बच्चों में कौतूहल उत्पन्न करने के साथ साथ बुनियादी कौशलो (श्रवण, पठन कौशल) का विकास भी होता है। पहेलियों में ही समस्या का समाधान छिपा होता है। अतः उस समाधान को ढूंढने हेतु पहेली को ध्यानपूर्वक सुनना या पढ़ना आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ -

" गोल गोल हैं जिसकी आंखे
भाता नहीं उजाला।
दिन में सोता रहता हरदम
रात विचरने वाला।। "

भाषा के विकास में समाचार पत्रों की महत्ता को हम संक्षेप में निम्न बिंदुओं द्वारा समझ सकते हैं -

- समाचार पत्रों के संपर्क में रहने से पाठक के व्यक्तिगत शब्दकोश में वृद्धि होती है जिससे उनमें भाषा का विकास होता है।
- समाचार पत्रों के द्वारा बच्चों को भाषा के संदर्भानुकूल उचित प्रयोग का ज्ञान होता है।

- समाचार पत्र भाषा के कलात्मक नमूने पेश करते हैं तथा बच्चों को स्वाध्याय करने के लिए भी प्रेरित करते हैं।
- पाठकों को लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों आदि के अर्थों का ज्ञान और इनके प्रयोगों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- समाचार पत्रों में प्रकाशित विभिन्न लेखों से पाठकों में साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।
- पाठक साहित्य की विभिन्न विधाओं से भी परिचित होते हैं।
- समाचार पत्रों के द्वारा बच्चों में पठन कौशल का विकास होता है जिसके परिणाम स्वरूप लेखन कौशल का भी विकास होने लगता है।
- समाचार पत्रों के द्वारा बच्चे *मौन* वाचन करना सीख सकते हैं।
- शुद्ध उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करने, सही वर्तनी अवबोध का ज्ञान प्राप्त करने में समाचार पत्र सहायक सिद्ध होते हैं।
- समाचार पत्रों द्वारा बच्चे पूर्णविराम, अर्द्धविराम, अल्पविराम आदि के चिन्हों व उनके उचित प्रयोगों से अवगत होते हैं।
- समाचार पत्रों की भाषा संदर्भानुकूल होती है। अतः समाचार पत्रों की भाषा द्वारा बालक वाक्यों का उचित प्रयोग करना सीख सकते हैं।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से समाचार पत्रों में पाए जाने वाले दोष

बाल समाचार पत्रों की सफलता -असफलता काफी हद तक इनमें प्रयुक्त की गई भाषा के स्वरूप पर निर्भर करती है। भाषा विकास की दृष्टि समाचार पत्रों में कुछ कमियां भी दिखाई देती हैं, जो इसप्रकार हैं -

- समाचार पत्रों में ऐसी भाषा को प्राथमिकता देनी चाहिए जो बच्चों के मनोविज्ञान व आयु के स्तरानुसार *अनुकूल* हो।
- भाषा का स्वरूप बहुत अधिक कठिन नहीं होना चाहिए। सरल, सहज व प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

  समाचार पत्रों में भाषा का संक्रमण भी देखने को मिलता है। अक्सर हिंदी के अखबारों में अंग्रेज़ी के शब्दों का बहुतायत प्रयोग किया जाने लगा है। इस अनावश्यक प्रयोग से हिंदी अंग्रेज़ी आश्रित हो रही है। हिंदी पर जबरन अंग्रेज़ी लादने से हिंदी का विकास अवरूद्ध हो जाता है।
- बच्चों के लिए लिखते समय बहुत अधिक व्यवहारिक, तकनीकी व परिभाषिक शब्दावली के प्रयोग से बचना चाहिए।
- बालपत्रों में मिश्रित व संयुक्त वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। वाक्य *छोटे-छोटे होने* चाहिए।

- अक्सर समाचार पत्रों में अनुस्वार और अनु नासिक के स्थान पर केवल अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। परिणाम स्वरूप विद्यार्थी समाचार पत्र पढ़कर गलत शब्दों को सीख जाते हैं। वे अनुस्वार लगाना तो सीख जाते हैं लेकिन अनुनासिक का प्रयोग नहीं कर पाते जो दोष पूर्ण है।
- अक्सर प्रकाशित होने वाली सामग्री का ज़्यादा हो जाने के कारण संपादकों को सक्षिंप्त शब्दावली का प्रयोग करना पड़ जाता है जिससे भाषा के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

समाचार पत्रों के उचित प्रयोग में अध्यापको की भूमिका

भाषा-शिक्षण में शिक्षक का दायित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है जो विद्यार्थियों की योग्यता, रुचि तथा आवश्यकतानुसार पाठ्यसामग्री को व्यवस्थित करता है तथा उसके शिक्षण की योजना को तैयार करता है। विभिन्न तकनीकों व साधनों की सहायता से शिक्षक शिक्षण सामग्री को अपनी कुशलता से प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे विद्यार्थी भाषा अधिगम के लिए प्रेरित हो सकें।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समाचार पत्र बहुत अहम भूमिका निभा सकते हैं बस आवयश्कता अध्यापक द्वारा समाचार पत्रों का उचित प्रयोग करने की है।

बाल समाचार पत्रों का प्रयोग भाषा शिक्षण में किस तरह किया जाए ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि इसके लिए शिक्षकों के पास कोई दिशा निर्देश नहीं होते। अक्सर अध्यापक अपनी रुचि या अनुभव के आधार पर ही इनका प्रयोग करते हैं। हम देखते हैं कि समाचार पत्र अक्सर विद्यालयों की लाइब्रेरी में रखें रहते हैं जिनको विद्यार्थी खाली समय में पढ़ लिया करते हैं। अध्यापकों को चाहिए कि वे समाचार पत्रों को अपने शिक्षण प्रक्रिया में उचित स्थान दे जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाया जा सके। समाचार पत्रों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग करते समय अध्यापकों को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

- एक बार देखा गया कि एक हिंदी का अध्यापक समाचार पत्र के अपठित सामग्री का पठन शिक्षार्थियों द्वारा कराता है। उसने विद्यार्थियों से समाचार पत्र को पढ़ने के लिए कहा। यह चौथी कक्षा थी । ऐसा अनुभव किया गया कि विद्यार्थियों को समाचार पत्र पढ़ने में काफी दिक्कत हो रही है क्योंकि समाचार पत्र में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया था वह शब्द विद्यार्थियों की आयु स्तर के हिसाब से काफी जटिल थे। अतः अध्यापकों को समाचार पत्रों में से बच्चों के लिए सामग्री का चयन करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि चयनित सामग्री की भाषा बच्चों की आयु स्तर के अनुकूल हो।

- कुछ हिंदी अखबारों में भाषा का स्वरूप मानक नहीं होता। संस्कृतनिष्ठ अत्यधिक जटिल भाषा भी भाषा अधिगम में अवरोध उत्पन्न करती है। अतः शिक्षक को ऐसे समाचार पत्रों के चयन से भी बचना चाहिए।
- कुछ हिंदी समाचार पत्रों में भाषा का संक्रमण देखने को मिलता है। वह कहने को तो हिंदी के पत्र होते हैं लेकिन उनकी भाषा में अंग्रेज़ी के शब्दों का समावेश अनावश्यक रूप से बहुतायत देखने को मिलता है जिससे हिंदी का विकास अवरूद्ध हो जाता है। अतः ऐसे समाचार पत्रों के प्रयोग से भी बचना चाहिए।
- बाल पत्रों में संकलित बाल गीतों को कक्षा में सुर के साथ गाया जा सकता है या बार बार पढ़वाया जा सकता है जिससे बच्चों के श्रवण कौशल और पठन कौशल का विकास होगा।
- बच्चों के लिए प्रकाशित कहानियों को कक्षा में सुनाया या पढ़वाया जा सकता है और अंत में कहानी से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं जिससे बच्चो में बाल कौशलो का विकास होता है।
- बाल समाचार पत्रों की भाषा के माध्यम से बच्चो को भाषा के आदर्श स्वरूप (मानक) से भी परिचित कराया जा सकता है। भाषा की सरंचना, वाक्य विन्यास, विराम चिन्हों, लोकोक्तियों, मुहावरों आदि के अर्थों व उनके संदर्भानुसार प्रयोग से भी बच्चे धीरे-धीरे परिचित होते हैं जो निश्चय ही भविष्य में उनके लेखन कौशल के विकास हेतु लाभकारी सिद्ध होते हैं।
- हमको ज्ञात है कि समाचार पत्रों में भी अनेक भाषा व बोलियों के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। अतः एक कुशल अध्यापक शिक्षण के दौरान बच्चों को उन नवीन शब्दों के अर्थों से अवगत कराता है जो समाचार पत्र की सामग्री में प्रयुक्त हुए हैं परिणाम स्वरूप बच्चों के व्यक्तिगत शब्दकोश में नए शब्दों का समावेश होता है।

उपसंहार

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को भाषा का ज्ञान देने में बाल समाचार पत्र विशेष भूमिका निभा सकते हैं बस अध्यापक द्वारा उनका कक्षा में उचित प्रयोग किया जाए। भाषा-शिक्षक के लिए तो समाचार पत्र एक वरदान के समान है जिसके द्वारा वह बच्चों को आसानी से भाषा की संरचना, विविध प्रयोगों तथा बाल कौशलो (पठन कौशल, श्रवण कौशल) का ज्ञान करा सकता है। समाचार पत्रों के उचित प्रयोग द्वारा बालक अपने व्यक्तिगत शब्दकोश में वृद्धि करके अपनी भाषा को समृद्ध बनाते हैं। अतः कहना अनुचित न होगा कि समाचार पत्र भाषा शिक्षण में बहुत अहम भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2006, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली,
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2006, भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र,एन.सी. ई.आर.टी.,नई दिल्ली,
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2006, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा.नई दिल्ली,
- कुमार, कृष्ण 2000, बच्चे की भाषा और अध्यापक - एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली,
- पाण्डे, लता. 2012. पठन कौशल का विकास- कुछ बुनियादी सरोकार, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. , नई दिल्ली
- फिरोजा, मु. 2003. वाक-वाचन और लेखन कौशल का विकास, प्राथमिक शिक्षक, एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली।